हमीद कानपुरी

कानपुर, उत्तर प्रदेश

ग़ज़ल

1

अगर चाहते हो भला क़ौम का तो।
नहीं चाहते जो बुरा क़ौम का तो।

सदा काम अपने करो मन लगाकर,
अगर चाहते दबदबा क़ौम का तो।

ज़रूरत पे बढ़कर सहारा उसे दो,
बढ़ा चाहते हौसला क़ौम का तो।

बुरे काम करना नहीं भूल कर भी,
अगर चाहते सर उठा क़ौम का तो।

हलाली नमक की ज़रूरी बहुत है,
कभी भी नमकजो चखा क़ौम का तो।

2

ज़रा भी आँख उसकी नम नहीं है
पराजय का उसे कुछ ग़म नहीं है

खुशी का लग रहा मौसम नहीं है
किसी भी फूल पर शबनम नहीं है

लड़ाई फिर न लड़पाओगे जमकर
जिगर में गर तेरे दमखम नहीं है

गमों की भीड़ है चारों तरफ ही
गमों का पास पर मरहम नही है

अता हम को किया है रब ने सब कुछ
करम हम पर ख़ुदा का कम नहीं है